Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
Deptt of History
B. A Part - II
paper - III
Topic - Chola Empire. (Part - I)

Q. चोल साम्राज्य की उत्पत्ति एवं विस्तार की व्याख्या करें ?

सुदूर दक्षिण के प्राचीन इतिहास में वहाँ की तीन परम्परागत राजनीतिक शक्तियों का वर्णन प्राप्त होता है। ये तीन शक्तियाँ थीं- चोल, चेर और पाण्ड्य। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के लगभग कात्यायन ने चोलों का उल्लेख किया जाता है। अशोक के द्वितीय शिलालेख में पाड्यों सतियपुत्रों और केरल पुत्रों के साथ चोलों के स्वतंत्र राज्य का उल्लेख मिलता है। इन राज्यों के साथ सम्राट अशोक का मैत्री संबंध था। संगम युग के तमिल साहित्य में चोल वंश के जिन राजाओं का उल्लेख मिलता है, उनमें करिकाल ऐतिहासिक व्यक्ति जान पड़ता है। वो इस युग में चोल वंश का एक शक्तिशाली और सुप्रसिद्ध शासक था, वह ~~साह~~ महान विजेता था। उसने अपनी सैन्य विजयों द्वारा सुदूर दक्षिण के अन्य राज्यों पर चोलों की धाक जमा दी।

करिकाल की राजनीतिक सफलताओं का जितना अधिक महत्व है, उतना ही महत्व उसकी शान्तिकालीन विषयों का है। वह वैदिक धर्म का अनुयायी था और उसने यज्ञों का अनुष्ठान किया था। पेरुनरकिल्ली भी चोल वंश का एक शक्तिशाली शासक था जिसने राजसूय यज्ञ करने का गौरव प्राप्त था। कोच्चनुगणान नामक चोलनृपति ने भी करिकाल की भाँति पर्याप्त ख्याति अर्जित की। पल्लवों के उत्कर्ष से भी चोल शक्ति को काफी धक्का पहुँचा फिर भी चोलों का

का पूर्ण विनाश नहीं किया जा सका। संगम युग के बाद से विजयालय के पूर्व तक की कुः शताब्दियों में चोलों के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है।

तक्कोलम के युद्ध ने चोल साम्राज्य को समाप्त कर दिया। परन्तु परान्तक प्रथम के समय शासन प्रबंध का गौरव अक्षुण्ण रहा। परान्तक ने वेल्लाल के युद्ध के बाद 25 वर्ष तक बिल्कुल शान्तिपूर्वक राज्य किया और एक सुव्यवस्थित शासन पद्धति को जन्म दिया। उनकी शासन व्यवस्था में ग्रामों तथा शासन की बड़ी इकाइयों में लोक संस्थाओं को स्वशासन का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। परान्तक I के उत्तर मेरुर अभिलेखों में उसकी शासन व्यवस्था का वर्णन किया गया है। उसके शासन काल में साहित्य की उन्नति हुई।

953 ई० में परान्तक की मृत्यु हुई। उसकी मृत्यु के बाद चोलों की शक्ति नाममात्र की ही रही। 985 ई० में राजराज I सिंहासनारूढ़ हुआ जिसने चोलों की राजनीतिक शक्ति को न केवल पुनरुज्जीवित ही किया बल्कि उन्हें उनके गौरव के उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। 953 से 985 तक का 32 वर्ष का समय चोल इतिहास का तिमिराच्छन्न युग है। इस काल में चोल राजाओं की वंशावली कुछ अनिश्चित है और इस प्रकार से उनका कालक्रम भी निश्चित नहीं किया जा सकता। परान्तक के पश्चात् उसका द्वितीय पुत्र गण्डरादित्य चोलवंश का राजा हुआ। राजादित्य तक्कोलम के युद्ध में मारा गया था।

गण्डरादित्य की ख्याति

राजनीति में न होकर धर्म के क्षेत्र में है। गण्डरादित्य के पुत्र उत्तम चोल ने जो स्वयं राज्य का स्वामी होना चाहता था आदित्य चोल को मार डाला। अपने सुयोग्य पुत्र तथा युवराज की हत्या से व्यथित होकर सुन्दर चोल स्वर्ग सिधार गये। सुन्दर चोल के बाद उत्तम चोल ने 973 ई० से 985 ई० तक शासन किया। उत्तम चोल ने स्वर्ण के सिक्के चलाये, जो चोलवंश के सबसे प्राचीन सिक्के है। उत्तम चोल के बाद राजराज को राजराज को राज्यसिंहासन प्राप्त हुआ।

प्रो० नीलकंठ शास्त्रों के शब्दों में "राजराज प्रथम" के राज्यरोहण से हम चोल वंश के इतिहास में गौरव तथा वैभव की शताब्दी में प्रवेश करते है। राजराज प्रथम के तीसवर्षीय शासन काल को चोल राजतंत्र के इतिहास का निर्माणात्मक युग कहा जा सकता है। राजराज प्रथम परान्तक द्वितीय का पुत्र था। उसकी प्रथम सफलता यह थी कि उसने कन्दलूर में चेरों के एक जहाज़ी बेड़े को विनष्ट कर दिया। दक्षिण में राजराज प्रथम ने केवल चेर नरेश भास्कर रविवर्मन को ही नहीं परास्त किया, अपितु उसे पाड्य नरेश तथा लंकाधिपति के विरुद्ध भी सफलता प्राप्त हुई। उसने पाड्य नरेश तथा लंकाधिपति के विरुद्ध भी सफलता प्राप्त हुई। उसने पांड्य राज्य में चोलो का अधिकार जमा दिया और उत्तरी लंका को भी अपने राज्य में मिला लिया। लंका में अपनी विजय स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए राजराज प्रथम ने वहाँ भगवान शिव का एक मंदिर बनाया। उत्तरी लंका का क्षेत्र मुम्मडि- चोल- मण्डलम के नाम से चोलप्रान्त बन गया।